MODEL PAPER – 2

- परीक्षार्थियों के लिये निर्देश MODEL PAPER – 1 के समान होगा।

खण्ड–अ (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

प्रश्न संख्या 1 से 100 तक के प्रत्येक वस्तुनिष्ठ प्रश्न के साथ चार विकल्प दिये गए हैं, जिनमें से कोई एक सही है। इन 100 प्रश्नों में से किन्हीं 50 प्रश्नों के अपने द्वारा चुने गए सही विकल्प को OMR उत्तर-पत्रक पर चिह्नित करें। $50 \times 1 = 50$

1. लेखक बालकृष्ण भट्ट का दो खण्डों में एक निबंध संग्रह प्रकाशित है, उसका नाम क्या है ?
   (A) रहस्य कथा (B) नूतन ब्रह्मचारी
   (C) भट्ट निबंधमाला (D) गुप्त वैरी
2. 'सुखमय जीवन' किस लेखक की रचना है ?
   (A) जयप्रकाश नारायण (B) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
   (C) मलयज (D) उदय प्रकाश

3. लहना सिंह को गोली कहाँ लगी थी ?
(A) सिर में (B) हाथ में (C) जाँघ में (D) पेट में

4. जयप्रकाश नारायण शिक्षा प्राप्ति के लिए अमेरिका कब गए ?
(A) 1924 ई॰ में (B) 1921 ई॰ में (C) 1928 ई॰ में (D) 1922 ई॰ में

5. जयप्रकाश नारायण ने राजनीति में करप्शन का कारण किसे बताया है ?
(A) चुनाव का खर्चा (B) महँगाई
(C) चोरी (D) गरीबी

6. रामधारी सिंह दिनकर की पहली कविता किस वर्ष प्रकाशित हुई ?
(A) 1920 ई॰ में (B) 1925 ई॰ में (C) 1927 ई॰ में (D) 1926 ई॰ में

7. जैन धर्म का वह सम्प्रदाय जो वस्त्रहीन जीवनचर्या स्वीकार करता है, उसे क्या कहते हैं ?
(A) श्वेताम्बर (B) नीलाम्बर (C) दिगंबर (D) पीताम्बर

8. 'शेखर एक जीवनी' नामक उपन्यास कितने भाग में लिखा गया है ?
(A) तीन (B) पाँच (C) चार (D) दो

9. लेखक जैनेन्द्र कुमार की रचना 'त्यागपत्र' का अंग्रेजी अनुवाद किसने किया ?
(A) भगत सिंह ने (B) जे॰ कृष्णमूर्ति ने
(C) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय ने (D) मलयज ने

10. 'रोज' शीर्षक पाठ में मालती के पिता ने मालती को कितने पेज रोज पढ़ने को कहा ?
(A) चार (B) दस (C) पाँच (D) बीस

11. लाला लाजपत राय के सहयोगी कौन थे ?
(A) भगत सिंह के पिता और चाचा (B) भगत सिंह के दादा
(C) भगत सिंह के मामा (D) भगत सिंह के नाना

12. 'साम्यवाद' के जन्मदाता कौन थे ?
(A) प्लेटो (B) कार्ल मार्क्स (C) अरस्तू (D) निकोलस

13. जगदीशचंद्र माथुर की रचना 'शारदीया' का प्रकाशन किस वर्ष किया गया ?
(A) 1956 ई॰ में (B) 1958 ई॰ में (C) 1959 ई॰ में (D) 1957 ई॰ में

14. 'धाँगड़' शब्द का अर्थ ओराँव भाषा में क्या है ?
(A) कैदी (B) भाड़े का मजदूर
(C) शक्तिशाली (D) इनमें से कोई नहीं

15. किसके आग्रह पर गाँधीजी ने चम्पारन जाना स्वीकार किया ?
(A) दीनदयाल पाठक (B) शंभुनाथ मिश्र
(C) राजकुमार शुक्ल (D) शिववचन शुक्ल

16. लौरिया नंदनगढ़ के सिंह स्तम्भ का निर्माण किसने करवाया था ?
(A) चन्द्रगुप्त मौर्य ने (B) अजातशत्रु ने
(C) बिंबिसार ने (D) सम्राट अशोक ने

17. लेखक मोहन रोकेश के पिताजी का नाम क्या था ?
(A) करमचंद गुर्गलानी (B) रामजतन गुगलानी
(C) शंकर गुगलानी (D) रामजी गुगलानी

18. लेखक मोहन राकेश किस युग के प्रमुख कथाकार एवं नाटककार थे ?
(A) अठारहवीं शती के (B) उन्नीसवीं शती के
(C) बीसवीं शती के उत्तरवर्ती के (D) सत्रहवीं शती के

19. 'सिपाही की माँ' शीर्षक पाठ में धन्नो कितने वर्ष की है ?
(A) चौदह वर्ष (B) तेरह वर्ष (C) पंद्रह वर्ष (D) सोलह वर्ष

20. 1959 ई॰-1960 ई॰ में नामवर सिंह किस विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर थे ?
(A) पटना विश्वविद्यालय में (B) बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में
(C) सागर विश्वविद्यालय में (D) भागलपुर विश्वविद्यालय में

21. 'मितकथन में अतिकथन से अधिक शक्ति होती है।'–यह पंक्ति किस शीर्षक पाठ की है ?
(A) जूठन (B) रोज
(C) शिक्षा (D) प्रगीत और समाज

22. लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि को 'जयश्री' सम्मान से कब सम्मानित किया गया ?
(A) 1996 ई॰ में (B) 1995 ई॰ में (C) 1994 ई॰ में (D) 1993 ई॰ में

23. 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' शीर्षक पाठ के अनुसार सुरक्षा कहाँ है ?
(A) रात्रि में (B) दोपहर में
(C) सूरज की रोशनी में (D) घर में

24. अनेक धारावाहिकों और टी॰ वी॰ फिल्मों के स्क्रिप्ट निम्न में से किसने लिखा है ?
(A) बालकृष्ण भट्ट (B) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(C) जयप्रकाश नारायण (D) उदय प्रकाश

25. 'तिरिछ' शीर्षक पाठ में एस॰ एच॰ ओ॰ का वैवाहिक जीवन कितने साल का था ?
(A) तेरह साल (B) बीस साल (C) चौदह साल (D) सत्रह साल

26. निम्न में से कौन परंपरित शिक्षा प्रणाली से असंतुष्ट थे ?
(A) भगत सिंह (B) जे॰ कृष्णमूर्ति
(C) बालकृष्ण भट्ट (D) उदय प्रकाश

27. 'आ, ई, ऊ' क्या है ?
(A) ह्रस्व स्वर (B) मूल स्वर (C) दीर्घ स्वर (D) द्विगुण व्यंजन

28. 'मुक्ताक्षर' की अंतिम ध्वनि क्या होती है ?
(A) व्यंजन (B) युग्मक (C) संपृक्त (D) स्वर

29. 'आविष्कार' का संधि-विच्छेद क्या होगा ?
(A) आवि: + कार (B) आ + विष्कार
(C) आवि + ष्कार (D) आविष्का + र

30. 'अनुस्वार' की ध्वनि प्रकट करने के लिए लिपि चिह्न के ऊपर क्या लगाया जाता है ?
(A) ँ (चन्द्र बिन्दु) (B) ं (बिन्दु)
(C) : (विसर्ग) (D) , (कौमा)

31. 'ठ' का उच्चारण-स्थान क्या है ?
(A) कंठ (B) तालु (C) मूर्द्धा (D) ओष्ठ

32. निम्न में से शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) जगरनाथ (B) छत्रछाया (C) श्रीमान (D) संवाद

33. द्वंद्व समास में पदों के बीच कौन चिह्न लगता है ?
(A) योजक चिह्न (–) (B) प्रश्नवाचक चिह्न (?)
(C) उद्धरण चिह्न (" ") (D) विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

34. 'कावेरी' नदी कौन संज्ञा है ?
(A) जातिवाचक (B) द्रव्यवाचक (C) व्यक्तिवाचक (D) भाववाचक

35. 'निर्माण' शब्द कौन लिंग है ?
(A) स्त्रीलिंग (B) उभयलिंग
(C) पुलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

36. 'भीख' शब्द क्या है ?
(A) तत्सम (B) देशज (C) विदेशज (D) तद्भव

37. 'नाला' शब्द का स्त्रीलिंग रूप क्या है ?
(A) नाली (B) नालिन (C) नलिनी (D) नालीक

38. 'में' किस कारक का विभक्ति चिह्न है ?
(A) संबोधन (B) अधिकरण (C) संबंध (D) करण

39. 'वाक्य' में क्रिया का फल जिस पर पड़ता है', उसे क्या कहते हैं ?
(A) करण (B) संप्रदान (C) कर्म (D) अपादान

40. 'छत से उतरी हुई लता'–किस कारक का उदाहरण है ?
(A) संप्रदान कारक (B) अपादान कारक
(C) संबंध कारक (D) अधिकरण कारक

41. हिन्दी में कुल कितने सर्वनाम हैं ?
(A) चौदह (B) तेरह (C) ग्यारह (D) बारह

42. 'जो कमाएगा वही खाएगा।'–किस सर्वनाम का उदाहरण है ?
(A) प्रश्नवाचक सर्वनाम (B) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(C) निजवाचक सर्वनाम (D) संबंधवाचक सर्वनाम

43. 'वह लड़का' किस विशेषण का उदाहरण है ?
(A) सार्वनामिक विशेषण (B) गुणवाचक विशेषण
(C) संख्यावाचक विशेषण (D) परिमाणबोधक विशेषण

44. जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाए, उसे क्या कहते हैं ?
(A) कर्म (B) क्रिया (C) कर्त्ता (D) कारक

45. 'वह खाता है।'–किस काल का उदाहरण है ?
(A) भूतकाल (B) भविष्यतकाल
(C) वर्तमानकाल (D) इनमें से कोई नहीं

46. अव्यय के कितने भेद होते हैं ?
(A) तीन (B) चार (C) पाँच (D) सात

47. रचना अथवा बनावट के अनुसार शब्द के कितने प्रकार हैं ?
(A) दो (B) चार (C) तीन (D) छः

48. 'शब्दांश' कितने प्रकार के होते हैं ?
(A) दो (B) चार (C) पाँच (D) सात

49. 'निर्वाह' शब्द में उपसर्ग क्या है ?
(A) नि (B) निर्वा (C) निर् (D) निव

50. 'भिड़ंत' शब्द में प्रत्यय क्या है ?
(A) त (B) डंत (C) ड़त (D) अंत

51. 'आनंद' शब्द का विशेषण क्या है ?
(A) आनंदित (B) आनंदन
(C) अवनंदन (D) इनमें से कोई नहीं

52. जिस समास में अंतिम पद प्रधान होता है, उसे कौन समास कहते हैं ?
(A) अव्ययीभाव समास (B) कर्मधारय समास
(C) तत्पुरुष समास (D) द्विगु समास

53. 'धर्माधर्म' कौन समास है ?
(A) बहुव्रीहि समास (B) द्विगु समास
(C) कर्मधारय समास (D) द्वंद्व समास

54. 'ध्यान में मग्न साधक'–यह किस पदबंध का उदाहरण है ?
(A) विशेषण-पदबंध (B) संज्ञा-पदबंध
(C) सर्वनाम-पदबंध (D) क्रिया-पदबंध

55. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के कितने भेद होते हैं ?
(A) सात (B) आठ (C) पाँच (D) नौ

56. 'सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा'–यह कौन वाक्य है ?
(A) संयुक्त वाक्य (B) मिश्र वाक्य
(C) सरल वाक्य (D) इनमें से कोई नहीं

57. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य कौन है ?
(A) इस बात के कहने में किसी को संकोच न होगा।
(B) उसने 'निवेदिता' शीर्षक कविता लिखी गई थी।
(C) साहित्य और जीवन का अभिन्न संबंध है।
(D) वकीलों ने कागजात का निरीक्षण किया।

58. 'कुबेर' शब्द का पर्यायवाची क्या होगा ?
(A) सदन (B) मधवा (C) दैत्य (D) धनद

59. 'आत्मा' शब्द का विलोम क्या है ?
(A) परमात्मा (B) अपमान (C) प्रतिलोम (D) नास्तिक

60. 'जिसके पाणि में चक्र है'–के लिए एक शब्द क्या है ?
(A) वीणापाणि (B) चक्रपाणि (C) वज्रपाणि (D) प्रवासी

61. 'जान पर खेलना' मुहावरे का क्या अर्थ है ?
(A) बुरी तरह पराजित होना (B) न इधर का, न उधर का
(C) साहसिक कार्य करना (D) बुरी राय देना

62. 'योग न होने पर भी जो साथ रहे'–उसे क्या कहते हैं ?
(A) निरनुनासिक (B) विसर्ग
(C) अयोगवाह (D) इनमें से कोई नहीं

63. 'कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग'–कौन व्यंजन हैं ?
(A) उष्म व्यंजन (B) अंतःस्थ व्यंजन
(C) संयुक्त व्यंजन (D) स्पर्श व्यंजन

64. 'उच्चारण' का संधि-विच्छेद क्या है ?
(A) उत् + चारण (B) [illegible] + चारण (C) उच्चा + रण (D) उच्चार + ण

65. 'म' का उच्चारण स्थान क्या है ?
(A) दंत (B) ओष्ठ (C) मूर्द्धा (D) कंठ

66. निम्न में से शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) दधिची (B) पून्य (C) अध्ययन (D) पृष्ट

67. 'प्रशांत महासागर' कौन संज्ञा है ?
(A) जातिवाचक (B) भाववाचक (C) द्रव्यवाचक (D) व्यक्तिवाचक

68. 'लज्जा' शब्द कौन लिंग है ?
(A) स्त्रीलिंग (B) पुलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

69. 'जीभ' शब्द क्या है ?
(A) तत्सम (B) तद्भव (C) देशज (D) विदेशज

70. 'उसने लड़कों को मिठाइयाँ दी'–यह किस कारक का उदाहरण है ?
(A) संप्रदानकारक (B) अपादानकारक
(C) संबंधकारक (D) अधिकरणकारक

71. 'उपनिवेश' शब्द का विशेषण क्या है ?
(A) उत्कृष्ट (B) औपनिवेशिक (C) उपनिवेशी (D) उपनिवेशिक

72. 'रस्सी का टुकड़ा' शीर्षक पाठ में बटुआ लौटाने वाले को कितने इनाम की घोषणा की गई ?
(A) तीस फ्रेंक (B) चालीस फ्रेंक (C) बीस फ्रेंक (D) पच्चीस फ्रेंक

73. 'क्लर्क की मौत' शीर्षक पाठ में क्लर्क का नाम क्या है ?
(A) तोल्सतोय (B) ब्रीजालोव
(C) एंटोनी (D) इवान दमीत्रिच चेरव्यकोव

74. 'पेशगी' शीर्षक पाठ में छोटी बच्ची का नाम क्या था ?
(A) फ्रैंक्वा (B) जूली (C) सिली (D) निकी

75. मलिक मुहम्मद जायसी के गुरु कौन थे ?
(A) नरहरि दास (B) शेष सनातन
(C) सूफी संत मोहिदी (D) रामानन्द

76. मलिक मुहम्मद जायसी कैसे कवि हैं ?
(A) प्रेम की पीर के (B) जागरूकता के
(C) शृंगार के (D) इनमें से कोई नहीं

77. सूरदास के दीक्षा गुरु कौन थे ?
(A) अच्युतानंद (B) शंकराचार्य
(C) विवेकाप्रभु (D) महाप्रभु वल्लभाचार्य

78. 'कनियाँ' का अर्थ क्या होता है ?
(A) गोद (B) आँचल (C) कंधा (D) हथेली

79. सूरदास रचित पद मुख्यतः किस भाव के हैं ?
(A) रौद्र भाव के (B) वात्सलय भाव के
(C) वीभत्स भाव के (D) शृंगार भाव के

80. पिता नंद की गोद में बैठकर बालक कृष्ण के भोजन करने का वर्णन सूर के किस पद में वर्णित है ?
(A) प्रथम पद में (B) तृतीय पद में
(C) द्वितीय पद में (D) इनमें से कोई नहीं

81. तुलसीदास का मुँहबोला नाम क्या था ?
(A) श्यामबोला (B) मोहनबोला (C) शाहबोला (D) रामबोला

82. तुलसीदास के दीक्षा गुरु का नाम क्या था ?
(A) नरहरि दास (B) शिवहरिदास
(C) गोवर्धन दास (D) प्रेमनारायण दास

83. 'रामलला नहछू' किस कवि की रचना है ?
(A) जायसी (B) तुलसीदास (C) सूरदास (D) नाभादास

84. नाभादास रचित 'भक्तमाल' के 316 छप्पयों में कितने भक्तों के चरित वर्णित हैं ?
(A) दो सौ (B) चार सौ (C) छह सौ (D) आठ सौ

85. छह पंक्तियों के गेय पद को क्या कहते हैं ?
(A) अनुष्टुप (B) छप्पय (C) ग (D) उल्लाला

86. कवि भूषण का जन्म किस वर्ष हुआ था ?
(A) 1613 ई॰ (B) 1617 ई॰ (C) 1618 ई॰ (D) 1619 ई॰

87. 'शिवराज भूषण' में कितने अलंकारों का निरूपण है ?
(A) 108 अलंकारों का (B) 105 अलंकारों का
(C) 107 अलंकारों का (D) 109 अलंकारों का

88. 'करवाल' का अर्थ क्या होता है ?
(A) तीर (B) धनुष (C) तलवार (D) भाला

89. जयशंकर प्रसाद रचित 'एक घूँट' नामक नाटक का रचनाकाल क्या है ?
(A) 1925 ई॰ (B) 1924 ई॰ (C) 1926 ई॰ (D) 1928 ई॰

90. 'कामायनी' महाकाव्य की नायिका का नाम क्या है ?
(A) श्रद्धा (B) सुमन (C) पुष्पलता (D) प्रेमलता

91. कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के क्रास्थवेस्ट गर्ल्स स्कूल में कौन प्रसिद्ध कवयित्री ने प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की ?
(A) अमृता प्रीतम (B) महादेवी वर्मा
(C) मीराबाई (D) सरोजिनी नायडू

92. "फिर भी कोई कुछ न कर सका
छिन ही गया खिलौना मेरा
मैं असहाय विवश बैठी ही
रही उठ गया छौना मेरा।" – यह पंक्ति किस कविता की है ?
(A) उषा (B) पुत्र-वियोग (C) हार-जीत (D) अधिनायक

93. 'नया खून' नामक पत्र का सम्पादन गजानन माधव मुक्तिबोध ने कहाँ से किया ?
(A) दुर्गापुर से (B) कानपुर से (C) नागपुर से (D) बिलासपुर से

94. निम्न में से किस कवि ने प्रायः लंबी कविताएँ ही लिखीं हैं ?
(A) विनोद कुमार शुक्ल (B) अशोक वाजपेयी
(C) ज्ञानेंद्रपति (D) गजानन माधव मुक्तिबोध

95. 'आत्महत्या के विरुद्ध' शीर्षक कविता किसकी रचना है ?
(A) नाभादास की (B) जयशंकर प्रसाद की
(C) शमशेर बहादुर सिंह की (D) रघुवीर सहाय की

96. 'अधिनायक' शीर्षक कविता में, पूरब-पश्चिम से कौन आते हैं ?
(A) नंगे-बूचे नरकंकाल (B) फौजी
(C) नेता (D) दरबारी

97. विनोद कुमार शुक्ल की रचना 'सब कुछ होना बचा रहेगा' साहित्य की कौन विधा है ?
(A) नाटक (B) कविता संग्रह (C) उपन्यास (D) कहानी

98. निम्न में से किस कवि को 1992 ई॰ में रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार प्राप्त हुआ ?
(A) भूषण को (B) रामधारी सिंह दिनकर को
(C) विनोद कुमार शुक्ल को (D) महादेवी वर्मा को

99. कवि ज्ञानेंद्रपति द्वारा रचित 'एकचक्रानगरी' क्या है ?
(A) कविता संग्रह (B) कहानी संग्रह (C) उपन्यास (D) काव्य नाटक

100. 'गाँव का घर' शीर्षक कविता में टिकुली साटने के लिए किस पेड़ से छुड़ाई गई गोंद का गेह है ?
(A) सहजन के पेड़ से (B) कटहल के पेड़ से
(C) इमली के पेड़ से (D) इनमें से कोई नहीं

खण्ड–ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिये : $1 \times 8 = 8$
(i) वर्षा ऋतु
(ii) रक्षाबंधन
(iii) स्वच्छ भारत
(iv) गरीबी एक अभिशाप
(v) मेरे जीवन का लक्ष्य
(vi) वृक्षारोपण

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या करें : $2 \times 4 = 8$
(i) "और अब घर जाओ तो कह देना कि मुझे जो उसने कहा था वह मैंने कर दिया।"
(ii) "व्यक्ति से नहीं हमें तो नीतियों से झगड़ा है, सिद्धान्तों से झगड़ा है, कार्यों से झगड़ा है।"
(iii) "प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि,
कालिका सी कीलकि कलेऊ देति काल को।"
(iv) "नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाई।"

3. अपने प्रधानाचार्य के पास एक आवेदन-पत्र लिखें, जिसमें भाई की शादी में शामिल होने के लिए चार दिनों की छुट्टी का निवेदन किया गया हो। $1 \times 5 = 5$

अथवा

अपने पिता के पास एक पत्र लिखें, जिसमें पुस्तक खरीदने के लिए रुपये भेजने का निवेदन किया गया हो।

4. निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच के उत्तर दें : $5 \times 2 = 10$
(i) 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' क्या है ?
(ii) जयप्रकाश नारायण कम्युनिस्ट पार्टी में क्यों नहीं शामिल हुए ?
(iii) 'अर्द्धनारीश्वर' शीर्षक पाठ के लेखक कौन हैं और नारी की पराधीनता कब से आरंभ हुई ? लिखें।
(iv) गैंग्रीन क्या है ? 'रोज' शीर्षक पाठ के अनुसार लिखें।
(v) भगत सिंह की विद्यार्थियों से क्या अपेक्षाएँ हैं ? 'एक लेख और एक पत्र' शीर्षक पाठ के अनुसार लिखें।
(vi) जायसी रचित कड़बक में 'रकत कै लेई' का क्या अर्थ है ? लिखें।
(vii) तुलसीदास रचित दोनों पदों में किस रस की व्यंजना हुई है ?
(viii) चातकी किसके लिए तरसती है ? 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता के अनुसार लिखें।
(ix) माँ के लिए अपना मन समझाना कब कठिन होता है और क्यों ? 'पुत्र-वियोग' शीर्षक कविता के आधार पर लिखें।
(x) 'दानव दुरात्मा' से क्या अभिप्राय है ? 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता के अनुसार लिखें।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन का उत्तर दें : $3 \times 5 = 15$
(i) जीवन क्या है ? इसका परिचय लेखक जे॰ कृष्णमूर्ति ने किस रूप में दिया है ?
(ii) तिरिछ को जलाने गए लेखक उदय प्रकाश को पूरा जंगल परिचित लगता है, क्यों ?
(iii) लेखक मलयज अपने किस डर की बात करते हैं ? इस डर की खासियत क्या है ? पठित पाठ के अनुसार लिखें।
(iv) भारत के राष्ट्रगीत 'जन-गण-मन-अधिनायक जय हे' से 'अधिनायक' शीर्षक कविता का क्या संबंध है ? वर्णन करें।
(v) 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव क्या है ? संक्षेप में लिखें।
(vi) तुलसीदास रचित प्रथम पद का भावार्थ लिखें।

6. निम्नलिखित अवतरणों में से किसी एक का संक्षेपण कीजिए : $1 \times 4 = 4$

(i) ऋतुराज वसन्त के आगमन से ही शीत का भयंकर प्रकोप भाग गया। पतझड़ में पश्चिम-पवन ने जीर्ण-शीर्ण पत्तों को गिराकर लताकुंजों, पेड़-पौधों को स्वच्छ और निर्मल बना दिया। वसन्त के आगमन के साथ ही जैसे जीर्णता और पुरातन का प्रभाव तिरोहित हो गया है। प्रकृति के कण-कण में नये जीवन का संचार हो गया है। आम्रमंजरियों की भीनी गंध और कोयल का पंचम आलाप, भ्रमरों का गुंजन और कलियों की चटक, वनों और उद्यानों में शोभा का संचार-सब ऐसा लगता है जैसे जीवन में सुख ही सत्य है। आनन्द के इस एक क्षण का मूल्य पूरे जीवन को अर्पित करके भी नहीं चुकाया जा सकता।

(ii) राष्ट्रीयता के विकास के लिए भाषा एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्व है। भाषा ही एक साधन है, जिसके द्वारा मानव अपने भावों को एक-दूसरे के सामने प्रकट करते हैं। जिस प्रकार पहाड़, नदी तथा समुद्र मनुष्य के आपस में मिलने-जुलने में रुकावट पैदा करते हैं, वैसे ही भाषा की भिन्नता मनुष्यों में पारस्परिक संबंध स्थापित करने में बाधक होती है। भाषा ही एक ऐसा साधन है, जिससे मनुष्य एक-दूसरे के समीप आ जाते हैं, उनमें घनिष्ठता स्थापित हो जाती है। यही कारण है कि एक भाषा बोलने वाले लोग परस्पर सहानुभूति रखते हैं।

उत्तर

खण्ड–अ (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

1. (C)	2. (B)	3. (C)	4. (D)	5. (A)	6. (B)
7. (C)	8. (D)	9. (C)	10. (D)	11. (A)	12. (B)
13. (C)	14. (B)	15. (C)	16. (D)	17. (A)	18. (C)
19. (B)	20. (C)	21. (D)	22. (A)	23. (C)	24. (D)
25. (A)	26. (B)	27. (C)	28. (D)	29. (A)	30. (B)
31. (C)	32. (D)	33. (A)	34. (C)	35. (C)	36. (D)
37. (A)	38. (B)	39. (C)	40. (B)	41. (C)	42. (D)
43. (A)	44. (B)	45. (C)	46. (C)	47. (C)	48. (A)
49. (C)	50. (D)	51. (A)	52. (C)	53. (D)	54. (D)
55. (B)	56. (A)	57. (C)	58. (D)	59. (A)	60. (B)
61. (C)	62. (C)	63. (D)	64. (A)	65. (B)	66. (C)
67. (D)	68. (A)	69. (B)	70. (A)	71. (B)	72. (C)
73. (D)	74. (A)	75. (C)	76. (A)	77. (D)	78. (A)
79. (B)	80. (C)	81. (D)	82. (A)	83. (B)	84. (A)
85. (B)	86. (A)	87. (B)	88. (C)	89. (D)	90. (A)
91. (B)	92. (B)	93. (C)	94. (D)	95. (D)	96. (A)
97. (B)	98. (C)	99. (D)	100. (A)		

खण्ड–ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. (i) वर्षा ऋतु

कहा जाता है कि वसन्त ऋतुओं का राजा है, तो वर्षा ऋतुओं की रानी है। वर्षाऋतु जितनी दुखदायी होती है, उतनी ही सुखदाय्री भी। वर्षाऋतु में सोये किसान के भाग्य जागते हैं। लेखक की कल्पना उड़ानें भरती हैं। कठोर धरती कोमल होती है।

पावस की फुहार पड़ती है और दिवस का पर्यावसान होता है तथा मनुष्य अपने कार्य सम्पादित करता है। जब संध्या होती है तब सभी लोग अपने घरों में आ जाते हैं और एक साथ मिलकर वर्षाकालीन आकाश को निहारने लगते हैं। वर्षाकाल की उदास धूमिल मटमैली संध्या में एक गोपन सौंदर्य होता है जो आँखों को बहुत भाता है।

वर्षाकाल की संध्या आकाश से धरती तक गीली नज़र आती है, ऐसी गीली मानो किसी ने अभी-अभी लीप दिया हो, सर्वत्र एक रंग, धूमिल और उदास रंग। लेकिन देखनेवाले इस रंगहीन रंग में भी सौन्दर्य को झाँक लेते हैं, तभी तो महाकवि निराला ने वर्षा की प्रकट उदासी में प्रकृति का गोपन सौन्दर्य देखा था।

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
संध्या सुन्दरी परी-सी धीरे-धीरे
चंचलता का कहीं नहीं आभास।

चंचलता का कहीं नहीं आभास है, फिर भी महाकवि को संध्या परी-सी और सुन्दरी नजर आ रही है। प्रकृति के मानवीकरण द्वारा कवि ने संध्या की उदासी में जो सौंदर्य दिखाया है, वस्तुतः प्रकृति के गत्वर सौंदर्य का ही वह परिचायक है।

पावसकाल में वर्षा की गति मन्थर हो अथवा तेज-दोनों में संध्या की छवि उभाषित हो उठती है। यदि दिनभर की वर्षा संध्या को रुक जाती है तो फिर जन-मन में आनन्द का अनुशासित आवेग देखते बनता है। लोग ऋतु के अनुकूल सत्तू की लिट्टी बनाते हैं या सत्तू भरकर पराठे बनवाते हैं, खा पीकर गप-शप करते सो जाते हैं। वस्तुतः उस समय उन्हें प्रकृति प्रदत्त अनिर्वचनीय सुख आनन्द का बोध होता है और वे यह अनुभव करते हैं कि उनका जन्म लेना या जीना सार्थक है। यदि वर्षा का रिमझिम में संध्या समय विचित्र हास्य बिखेरता हुआ चाँद दिख पड़ता है तो फिर प्रकृति के परस्पर विरोधी स्वरूप में दृश्यगत जो सौन्दर्य उद्घाटित होता है, वह आँखों को खूब फबता है।

वर्षाकालीन संध्या में, गाँवों में, जो दृश्य दिखायी पड़ता है वह प्रत्येक ऋतु में नहीं दीख पड़ता है। संध्या समय छप्परों से उठता धुआँ, कौओं का पंख झारना पेड़ों पर वर्षा जल की नन्हीं-नन्हीं बूदों का बौछार होना, गायों का रमाना, बछड़ों के गले में बंधी घंटों का टनटनाना अथवा मन्दिरों में घड़ीघंट की पवित्र ध्वनि सुनाई पड़ता उस समय आँखों और कानों को सर्वाधिक मधुर और अनुपलब्ध प्रतीत होते हैं। लगता है कि संध्या वर्षा की यह संध्या जरा और ठहरे रहे, संध्याकालीन वातावरण की शांति इसी प्रकार सौन्दर्यनिन्द बिखेरती रहे। यदि हमारा वश चले तो संध्या को रोक लें और कहें हे वर्षाकालीन शांत सौम्य! संध्या रुक जाओ, क्योंकि तुम्हारे शांतवासना रूप में जो स्थिर सौन्दर्य है, वह प्रकृति के विराजती सत्वर चित्र में कहाँ।

(ii) रक्षाबंधन

रक्षा बंधन का शाब्दिक अर्थ रक्षा करने वाला बंधन मतलब धागा है। इस पर्व में बहनें अपने भाई के कलाई पर रक्षा सूत्र बाँधते हैं और बदले में भाई जीवन भर उनकी रक्षा करने का वचन देते हैं। रक्षा बंधन को राखी या सावन के महीने में पड़ने के वजह से श्रावणी व सलोनी भी कहा जाता है। यह श्रावण माह के पूर्णिमा के पड़ने वाला हिंदू तथा जैन धर्म का प्रमुख त्यौहार है। पहले के समय रक्षा के वचन का यह पर्व विभिन्न रिश्तों के अंतर्गत निभाया जाता था पर समय बीतने के साथ यह भाई बहन के बीच का प्यार बन गया है।

एक बार की बात है, देवताओं और असुरों में युद्ध आरंभ हुआ। युद्ध में हार के परिणामस्वरूप, देवताओं ने अपना राज-पाठ सब युद्ध में गवा दिया। अपना राज-पाठ पुनः प्राप्त करने की इच्छा से देवराज इंद्र देवगुरु वृहस्पति से मदद की गुहार करने लगे। तत्पश्चात् देव गुरु बृहस्पति ने श्रावण मास के पूर्णिमा के प्रातः काल में निम्न मंत्र से रक्षा विधान संपन्न किया।

"येन बद्धो बलिराजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामभिवध्नामि रक्षे मा चल मा चलः।"

इस पूजा से प्राप्त सूत्र को इंद्राणी ने इंद्र के हाथ पर बांध दिया। जिससे युद्ध में इंद्र को विजय प्राप्त हुआ और उन्हें अपना हारा हुआ राज पाठ दुबारा मिल गया। तब से रक्षा बंधन का त्योहार मनाया जाने लगा।

भारत सरकार द्वारा रक्षा बंधन के अवसर पर डाक सेवा पर छूट दी जाती है। इस दिन के लिए खास तौर पर 10 रुपये वाले लिफाफे की बिक्री की जाती है। इस 50 ग्राम के लिफाफे में बहनें एक साथ 4-5 राखी भाई को भेज सकती हैं। जबकि सामान्य 20 ग्राम के लिफाफे में एक राखी ही भेजी जा सकती है। यह ऑफर डाक विभाग द्वारा बहनों को भेंट है अतः यह सुविधा रक्षाबंधन तक ही उपलब्ध रहता है और दिल्ली में बस, ट्रेन तथा मेट्रो में राखी के अवसर पर महिलाओं से टिकट नहीं लिया जाता है।

उपर्युक्त पौराणिक कथा से यह स्पष्ट है कि रेशम के धागे को केवल बहन ही नहीं अपितु गुरु भी अपने यजमान की सलामती की कामना करते हुए उसे बांध सकते हैं।

(iii) स्वच्छ भारत

स्वच्छ भारत अभियान एक देशव्यापी स्वच्छता अभियान है जिसका उद्देश्य देश भर में लोगों को स्वच्छता को लेकर जागरूक करना है, महात्मा गाँधी ने सर्वप्रथम देश को अपने आस-पास को स्वच्छ बनाए रखने की शिक्षा दी थी, इसलिए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महात्मा गाँधी की 145वीं जयंती पर 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत की थी।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत में सार्वजनिक शौचालयों को बनवाकर लोगों को खुले में शौच करने से रोंकना है जिससे खुले में फैल रही गन्दगी से मुक्ति मिल सके। स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य 2019 तक 1.2 करोड़ शौचालयों को बनवाकर देश को शौच-मुक्त भारत घोषित करना है। गाँवों में धुआँ-युक्त वातावरण को समाप्त करने हेतु उज्ज्वला योजना द्वारा गैस का कनेक्शन भी दिया जा रहा है। हर प्रकार से भारत को प्रदूषण मुक्त करने का उद्देश्य है।

इसलिए हर साल 2 अक्टूबर को सभी स्कूलों तथा कार्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के लिए कार्यक्रम रखे जाते हैं और इस दिन विद्यार्थियों को स्वच्छ रहने तथा अपने आस-पास की स्वच्छता बनाये रखने की शिक्षा दी जाती है।

इस अभियान को सफल बनाने के लिए सरकार ने साफ शहरों की सूची भी जारी करने की घोषणा की थी जिससे यह पता चलता है कि कौन-सा शहर सफाई में कितनी प्रगति कर रहा है। स्वच्छता में भगवान् का वास होता है अत: हम सभी को मिलजुल कर यह कोशिश करनी चाहिए कि हम अपने मोहल्ले, गली तथा गाँव की सफाई में अपना पूरा योगदान दें।

(iv) गरीबी एक अभिशाप

भारत की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक गरीबी है। भारत की दिन प्रतिदिन आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही है। देश में लिप्त भ्रष्टाचार अपने चरम सीमा पर है। गरीबों को हर खराब परिस्थिति की मार झेलनी पड़ती है। गरीबों को दो वक्त मजदूरी करने के बाद भी भरपेट खाना मुश्किल से नसीब हो पाता है। गरीबों को शारीरिक तौर पर उचित पालन पोषण नहीं मिलता है। गरीबों को ज्यादातर जगहों पर तिरस्कार किया जाता है। गरीब लोग अशिक्षित होने के कारण सही-गलत और अच्छाई-बुराई में फर्क नहीं कर पाते हैं। गरीब मजदूरों से बड़े व्यापारी अधिक मजदूरी कराते हैं लेकिन पैसे बहुत कम मिलते हैं। गरीब आदमी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए अच्छे स्कूल में दाखिला कराने में असमर्थ है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना, उनके लिए सपने जैसा है।

गरीबी बढ़ने का मुख्य कारण है जनसंख्या वृद्धि। जिस प्रकार जनसंख्या बढ़ रही है, रोजगार के अवसर प्राप्त नहीं हो रहे हैं। जिस प्रकार से देश में जनसंख्या बढ़ रहा है, प्रतिस्पर्धा का माहौल पनप रहा है। गरीब लोग अशिक्षित होकर देश के इस माहौल में पीछे चले जा रहे हैं। गरीबी की जड़ से दूर करने के लिए जनसंख्या पर नियंत्रण करना आवश्यक है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। हालाँकि विज्ञान ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। लोगों को लगता है कि सिर्फ कृषि करने से वह आगे नहीं बढ़ पा रहे है। प्राकृतिक आपदाओं जैसे अकाल इत्यादि के कारण भी गरीब किसानों को बहुत कुछ झेलना पड़ रहा है। देश की सरकार को जरूरत है कि वह कृषि जैसे क्षेत्रों में अधिक उन्नति करे और किसानों को विश्वास दिलाये कि इसमें वे काफी उन्नति कर सकते हैं।

विडंबना तो यह है कि देश में एक ओर टाटा, बिरला, अडाणी और अम्बानी इत्यादि है जिनके पास इतना पैसा और शोहरत है। दूसरी ओर गरीब लोग है जिन्हें दो वक्त का खाना भी मुश्किल से नसीब होता है।

देश में गरीबी को दूर करने के लिए उन्हें शिक्षित करना जरूरी है। लोगों को सही दिशा में प्रशिक्षित करना चाहिए ताकि उन्हें रोजगार के अवसर मिले। देश की कभी ना खत्म होने वाली महँगाई भी गरीबी का कारण है। सरकारें आयी और गयी मगर महँगाई वहीं खड़ी है। प्रति वर्ष डीजल, पेट्रोल के दाम बढ़ रहे हैं और सभी छोटे-बड़े चीजों के दाम निरंतर बढ़ रहे हैं। सरकार इस पर नियंत्रण नहीं कर पा रही है। यह भी गरीबी का एक कारण है। गरीब मजदूरों और किसानों के पास इतनी आमदनी नहीं होती कि वह इस महँगाई की मार को सहन कर सके।

निष्कर्ष : गरीबों को हर जगह दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती है। गरीबी एक ऐसी भयंकर समस्या है जिसे कोई भी महसूस नहीं करना चाहेगा। गरीबी हटाओ का नारा अक्सर लोग लगाते हैं और राज्य सरकार भी गरीबों के उत्थान के लिए बहुत कसमें खाती है। लेकिन प्रत्यक्ष रूप से ऐसा कोई बदलाव देश में आया नहीं है। शिक्षा गरीबों तक पहुँचनी जरूरी है ताकि वह अपने व्यक्तित्व को पहचान सके। ऐसी कोशिशें करनी चाहिए कि गरीब अपने आत्मविश्वास और शिक्षा के दम पर कुछ कर सके, तभी देश से गरीबी को मिटाया जा सकता है।

(v) मेरे जीवन का लक्ष्य

लक्ष्य का निर्धारण करना और हासिल करना मनुष्य के लिए एक नए जीवन की शुरूआत के समान होता है। जब मनुष्य वृद्धावस्था में भी अपने लक्ष्य को हासिल करना चाहता है तो उस समय मनुष्य के मन में खुशी के कोई ठिकाने नहीं होते हैं। बूढ़े को भी लक्ष्य की प्राप्ति जवान बना देती है।

लक्ष्य की प्राप्ति करने में जो कठिनाइयाँ सामने आती है। उन कठिनाइयों से भलीभाँति परिचित होकर ही आपको विश्वास और लगन के साथ परिश्रम करना चाहिए। व्यक्ति अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए माता-पिता और गुरुजनों का सहयोग ले सकता है।

गीता में एक बात कही गई है कि "कर्मियेवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचनः" इसका तात्पर्य देखा जाए तो इसका मतलब मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुँच जाऊँगा। यदि व्यक्ति के मन में यह आत्मविश्वास रहता है तो व्यक्ति अक्सर अपने लक्ष्य को आसानी से हासिल कर लेता है।

विद्यार्थी भी अपने जीवन में एक लक्ष्य का निर्धारण करते हैं। विद्यार्थियों के मन में भी बड़े होकर ऊँचे पद पर नौकरी हासिल करना, बड़े होकर डॉक्टर और इंजीनियर बनने का सपना होता है, जो विद्यार्थियों के लिए एक लक्ष्य और चुनौती की तरह होता है। यह लक्ष्य और चुनौती को हासिल करने के लिए विद्यार्थी पुरजोर से मेहनत करता है।

(vi) वृक्षारोपण

भूमिका– किसी कवि ने लिखा है–मेघों को बहकने से रोकता, जल को जमीन पर उतारता और आकाश में फैले जहर को पी जाता है पेड़। इसकी हरितिमा से दुनिया की कोई दौलत बराबरी नहीं कर सकती। ऑक्सीजन सिलिंडर लेकर चलने से पहले, हरित सपनों को सूखने से बचाने के लिए एक-एक पेड़ लगाने का प्रण करें।

वृक्ष की महत्ता– वृक्ष प्राणियों के वास्तविक मित्र है। यही कारण है कि हमारे पूर्वजों ने वृक्ष लगाने और उनकी पूजा पर जोर दिया। पूजा करने का अर्थ सिर्फ इतना ही था कि लोगों में वृक्षों और पौधों के प्रति पूज्य भाव जागरित हो और लोग इनकी सुरक्षा के लिए तत्पर हो। वृक्ष परमार्थ के जीते-जागते प्रतीक हैं। इस धरती पर जितने भी जीवधारी हैं, वृक्ष उनके वास्तविक रक्षक और मित्र हैं। धरती के जीवों का वृक्षों के साथ घनिष्ठ संबंध है। जल ही 'जीवन' है और इस 'जीवन' को वृक्ष ही आमंत्रित करते हैं। इनके स्नेहपूर्वक आमंत्र पर ही मेघ पृथ्वी पर जल बरसाते हैं तथा जीवों को उपकृत करते हैं। वृक्ष ही पर्यावरण को विशुद्ध एवं संतुलित करते हैं।

लाभ– वृक्ष पर्यावरण को प्रदूषणमुक्त करते हैं। हम वृक्षों से मीठे फल प्राप्त करते हैं। वृक्षों की लकड़ियों से ही तरह-तरह के उपस्कर तैयार किए जाते हैं। औषधीय पौधों से तरह-तरह की दवाइयाँ बनती है। पृथ्वी पर ऐसा कोई पेड़-पौधा नहीं है जिसमें कोई औषधीय तत्त्व न हो। हम अनेक पेड़-पौधों के औषधीय गुणों से परिचित हैं और आए दिन विभिन्न पेड़-पौधों के औषधीय गुणों की जानकारी के लिए रात-दिन अनुसंधान में लगे हुए हैं।

कटाई की प्रतिपूर्ति– आज मानव अपनी भौतिक प्रगति की तरफ आतूर है वह अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए बेधड़क वृक्षों की कटाई कर रहा है औद्योगिक प्रतिस्पर्धा और जनसंख्या के चलते वनों का क्षेत्रफल प्रतिदिन घटता जा रहा है। एक अनुमान के अनुसार एक करोड़ हेक्टेयर इलाके के वन काटे जाते हैं, अकेले भारत में ही 10 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में फैले वनों को काटा जा रहा है, वृक्ष

के कटने से पक्षियों का चहचहाना भी कम होता जा रहा है, पक्षी प्राकृतिक संतुलन स्थिर रखने में प्रमुख कारक है, परंतु वृक्षों की कटाई से तो वो भी अब कम ही दिखने लगे हैं, अगर इसी तरह से वृक्ष की कटाई होती रही तो इसके अस्तित्व पर ही एक प्रश्न चिह्न लग जाएगा।

उपसंहार–प्रत्येक मानव का यह कर्तव्य है कि वह स्वयं वृक्ष लगाए और दूसरों को भी वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित करे। वर्तमान की सुरक्षा ही भविष्य की सुरक्षा है। आएँ, हम यह संकल्प लें कि वृक्षारोपण के द्वारा हम आनेवाली पीढ़ी को शुद्ध पर्यावरण सौपेंगे।

2. (i) प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक दिगंत, भाग-2 की 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी से संकलित है। इसके लेखक पं॰ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हैं।

उपर्युक्त उद्धरण में उस समय का वर्णन है जब लहना सिंह मरणासन्न स्थिति में है, शत्रुओं की गोलियाँ शरीर में लगी है। उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया है। बीते हुए दिन की स्मृतियाँ उसे झकझोर रही हैं। ऐसी स्थिति में वह वजीरा सिंह से कहता है कि वह (वजीरा) जब घर जाएगा तो उस (सुबेदारनी) को कह देगा कि लहना सिंह को उसने जो कहा था, उसने (लहना) वह कर दिया अर्थात् उसने सूबेदार हजारा सिंह एवं उसके पुत्र बोधा सिंह के प्राणों की रक्षा अपने जीवन का बलिदान कर की है। उसने अपने वचन का पालन किया है।

इस प्रकार विद्वान लेखक ने यहाँ पर लहना सिंह के उदात्त चरित्र का वर्णन किया है। लहना सिंह ने उच्च जीवन सिद्धान्तों के पालन का आदर्श प्रस्तुत किया है। उसका जीवन कर्त्तव्य परायणता, निष्ठा, उच्च नैतिक मूल्य तथा अपने वचन का पालन करने का एक अनुकरणीय उदाहरण हैं।

(ii) प्रस्तुत वाक्य जयप्रकाश नारायण के भाषण 'संपूर्ण क्रांति' से लिया गया है। आन्दोलन के समय जयप्रकाश नारायण के कुछ ऐसे मित्र थे जो चाहते थे कि जेपी और इंदिरा जी में मेल-मिलाप हो जाय। इसी प्रसंग में जेपी ने कहा है कि उनका किसी व्यक्ति से झगड़ा नहीं है। चाहे वह इंदिराजी हों या कोई और उन्हें तो नीतियों से झगड़ा है, सिद्धांतों से झगड़ा है, कार्यों से झगड़ा है। जो कार्य गलत होंगे, जो नीति गलत होगी; जो सिद्धांत गलत होंगे–चाहे वह कोई भी हो, वे विरोध करेंगे।

(iii) प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक दिगन्त भाग-II के भूषण के 'कवित्त' शीर्षक पाठ से ली गई है। इन पंक्तियों में महाराज छत्रसाल के शौर्य वर्णन के क्रम में उनकी तलवार की विशेषता का वर्णन है। उनकी तलवार की धार बड़ी तेज है। वह काँटेरूपी शत्रु-दल के वीरों को काट-काटकर विनष्ट कर डालती है। वह तलवार शत्रु-दल के वीरों के सिरों को काट-काटकर रणचंडिका काली को मानो कलेवा चढ़ाती हो। कवि छत्रसाल की तलवार की प्रशंसा इसलिए करता है कि छत्रसाल तलवार युद्ध में निपुण थे। यही नहीं जब शौर्य संपन्न छत्रसाल म्यान से तलवार निकालकर शत्रु-दल पर टूटते थे तब उनकी चमचमाती तलवार प्रलय सूर्य की किरण की भाँति सघन अरिगज समूह के अंधकार को फाड़ देती थी।

(iv) प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक दिगन्त भाग-II के तुलसीदास के 'पद' शीर्षक पाठ से ली गयी है। प्रस्तुत पंक्तियों में माँ सीता की वंदना करते हुए कवि विनती करता है कि हे माँ ! कभी अवसर पाकर मेरी विनती प्रभु श्रीराम के चरणों में प्रस्तुत करना। मेरी करुण कथा की चर्चा करते हुए मेरे प्रति प्रभु-कृपा के लिए याद दिलाना। उन्हें याद दिलाते हुए कहिएगा कि आपकी दासी का एक भक्त आपका नाम-जप एवं भजन के द्वारा अपनी जीविका चला रहा है।

3. सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,
पी॰ एन॰ एंग्लो उच्च विद्यालय + 2,
पटना

द्वारा : वर्ग शिक्षक महोदय।

विषय : भाई की शादी में शामिल होने के लिए अवकाश हेतु आवेदन।

महाशय,

मैं बारहवीं कक्षा का छात्र हूँ। मेरे बड़े भाई की शादी 15 जनवरी, 2023 को है। मुझे शादी में शामिल होने के लिए 14 से 17 जनवरी तक छुट्टी चाहिए। अत: मुझे चार दिनों का अवकाश प्रदान की कृपा की जाय। इस कृपा के लिए मैं आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र
सुरेश
क्रमांक–34
वर्ग-XII

दिनांक : 13 जनवरी, 2023

अथवा

परीक्षा केन्द्र
सुरी उच्च विद्यालय + 2
मधुबनी
20 जनवरी, 2023

पूजनीय पिताजी,

सादर प्रणाम।

मैं यहाँ सकुशल छात्रावास में रह रहा हूँ। आशा है, आपलोग भी सकुशल होंगे। पुस्तक खरीदने के लिए मुझे रुपये की जरूरत है। छात्रावास का शुल्क और भोजन इत्यादि का खर्च भी चाहिए। अत: कृप्या 3,000 रुपये शीघ्रातिशीघ्र ए॰ टी॰ एम॰ से भेजने की कृपा करें। मैं वचन देता हूँ कि एक भी पैसा अब से फिजूलखर्ची में खर्च नहीं करूँगा।

माताजी को प्रणाम।

छोटे भाई-बहनों को आशीर्वाद।

आपका सुपुत्र
पुष्पेन्द्र कुमार

4. (i) 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' का अर्थ है–वार्तालाप की कला। 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' के हुनर की बराबरी स्पीच और लेख दोनों नहीं कर पाते। इस हुनर की पूर्ण शोभा काव्यकला प्रवीण विद्वतमंडली में है। इस कला के माहिर व्यक्ति ऐसे चतुराई से प्रसंग छेड़ते हैं कि श्रोताओं के लिए बातचीत कर्णप्रिय तथा अत्यन्त सुखदायी होती है। सुहृद गोष्ठी इसी का नाम है। सुहृद गोष्ठी की विशेषता है कि वक्ता के वाक्चातुर्य का अभिमान या कपट कहीं प्रकट नहीं हो पाता तथा बातचीत की सरसता बनी रहती है। कपट और एक-दूसरे को अपने पांडित्य के प्रकाश से परास्त करने का संघर्ष आदि रसाभास की सामग्री 'आर्ट ऑफ़ कनवरसेशन' का मूलतंत्र होती है। यूरोप के लोगों का 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' जगत् प्रसिद्ध है।

(ii) जय प्रकाश नारायण अमेरिका में घोर कम्युनिस्ट थे। वह लेनिन का जमाना था, वह ट्राटस्की का जमाना था। 1924 में लेनिन के मरने के बाद वे मार्क्सवादी बन गये। वे जब भारत लौटे तो घोर कम्युनिस्ट बनकर लौटे, लेकिन वे कम्युनिस्ट पार्टी में नहीं शामिल हुए। वे काँग्रेस में दाखिल हुए।

जय प्रकाश नारायण कम्युनिस्ट पार्टी में इसलिए शामिल नहीं हुए क्योंकि उस समय भारत गुलाम था। उन्होंने लेनिन से जो सीखा था वह यह सीखा था कि जो गुलाम देश हैं, वहाँ के जो कम्युनिस्ट हैं, उनको कदापि वहाँ की आजादी की लड़ाई से अपने को अलग नहीं रखना चाहिए। चाहे उस लड़ाई का नेतृत्व 'बुर्जुआ क्लास' करता हो या पूँजीपतियों के हाथ में उसका नेतृत्व हो।

(iii) 'अर्द्धनारीश्वर' शीर्षक पाठ के लेखक राष्ट्रकवि दिनकर हैं। जब मानव जाति ने कृषि का आविष्कार किया तो नारी घर में और पुरुष बाहर रहने लगा। यहाँ से जिंदगी दो टुकड़ों में बँट गई। घर का जीवन सीमित और बाहर का जीवन निस्सीम होता गया एवं छोटी जिंदगी बड़ी जिंदगी के अधिकाधिक अधीन होती चली गई कृषि विकास के साथ ही नारी की पराधीनता आरम्भ हो गई।

(iv) पहाड़ियों पर रहने वाले व्यक्तियों को काँटा चुभना आम बात है। परन्तु काँटा चुभने के बाद बहुत दिनों तक छोड़ देने के बाद व्यक्ति का पाँव जख्म का शक्ल अख्तियार कर लेता है जिसका इलाज मात्र पाँव का काटना ही है। काँटा चुभने पर जख्म ही गैंग्रीन कहते हैं।

(v) भगत सिंह कहते हैं कि हिन्दुस्तान को ऐसे देशसेवकों की जरूरत है जो तन-मन-धन देश पर अर्पित कर दें और पागलों की तरह सारी उम्र देश की आजादी के लिए या देश के विकास में न्योछावर कर दे। यह कार्य सिर्फ विद्यार्थी ही कर सकते हैं। सभी देशों को आजाद करने वाले वहाँ के विद्यार्थी और नौजवान ही हुआ करते हैं। वे ही क्रांति कर सकते हैं। अत: विद्यार्थी पढ़े।

जरूर पढ़े। साथ ही पॉलिटिक्स का भी ज्ञान हासिल करे और जब जरूरत हो तो मैदान में कूद पड़े और अपना जीवन इसी काम में लगा दे। अपने प्राणों को इसी में उत्सर्ग कर दे। यही अपेक्षाएँ हैं विद्यार्थियों से भगत सिंह की।

(vi) यहाँ पर लेखक ने लेई के रूपक से यह बताने की चेष्टा की है कि उसने अपने कथा के विभिन्न प्रसंगों को किस प्रकार एक ही सूत्र में बाँधा है। कवि कहता है कि मैंने अपने रक्त की लेई बनाई है अर्थात् कठिन साधना की है। यह लेई या साधना प्रेमरूपी आँसुओं से अप्लावित की गई है। कवि का व्यंग्यार्थ है कि इस कथा की रचना उसने कठोर सूफी साधना के फलस्वरूप की है और फिर इसको उसने प्रेमरूपी आँसुओं से विशिष्ट आध्यात्मिक विरह द्वारा पुष्ट किया है। लौकिक कथा को इस प्रकार अलौकिक साधना और आध्यात्मिक विरह से परिपुष्ट करने का कारण भी जायसी ने अपनी काव्यकृति के द्वारा लोक जगत में अमरत्व प्राप्ति की प्रबल इच्छा बताया है।

(vii) दोनों पदों में भक्ति-रस की व्यंजना हुई है। तुलसीदासजी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा जगत जननी सीता की स्तुति द्वारा भक्तिभाव की अभिव्यक्ति इन पदों में की है।

(viii) चातकी एक पक्षी है जो स्वाति की बूँद के लिए तरसती है। चातकी केवल स्वाति का जल ग्रहण करती है। वह सालोभर स्वाति के जल की प्रतीक्षा करती रहती है और जब स्वाति की बूँद आकाश से गिरता है तभी वह जल ग्रहण करती है। इस कविता में यह उदाहरण सांकेतिक है। दुःखी व्यक्ति सुख प्राप्ति की आशा में चातकी के समान उम्मीद बाँधे रहते हैं। कवि के अनुसार, एक-न-एक दिन उनके दुःखों का अंत होता है।

(ix) माँ के लिए अपने मन को समझाना तब कठिन हो जाता है, जब वह अपना बेटा खो देती है। बेटा माँ की अमूल्य धरोहर होता है। माँ की आँखों का तारा होता है। माँ का सर्वस्व यदि क्रूर नियति द्वारा उससे छीन लिया जाता है, उसके बेटे की मृत्यु हो जाती है तो माँ के लिए अपने मन को समझाना कठिन होता है।

(x) पूरे विश्व की स्थिति अत्यन्त भयावह, दारुण तथा अराजक हो गई है। दानव और दुरात्मा का अर्थ है—जो अमानवीय कृत्यों में संलग्न रहते हैं, जिनका आचरण पाश्विक होता है उन्हें दानव कहा जाता है। जो दुष्ट प्रकृति के होते हैं तथा दुराचारी प्रवृत्ति के होते हैं उन्हें 'दुरात्मा' कहते हैं। वस्तुतः दोनों में कोई भेद नहीं है, एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं। ये सर्वत्र पाए जाते हैं।

5. (i) लेखक जे॰ कृष्णमूर्ति ने जीवन के व्यापक स्वरूप को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। जीवन बड़ा अद्‌भुत, असीम और अगाध तत्व है। जीवन अनंत रहस्यों से युक्त एक विशाल साम्राज्य है, जिसमें मानव कर्म करते हैं। जीवन समुदायों, जातियों और देशों का पारस्परिक संघर्ष है। जीवन ध्यान है, जीवन धर्म है, जीवन गूढ़ है, जीवन विराट है, जीवन सुख-दुख और भय से युक्त होते हुये भी आनंदमय है।

जीवन का परिचय देते हुए लेखक का मानना है कि इसमें अनेक विविधताओं, अनंतताओं के साथ रहस्य अनेकों भी मौजूद हैं। यह कितना विलक्षण है। प्रकृति में उपस्थित पक्षीगण, फूल, वैभवशाली वृक्षों, सरिताओं, आसमान के तारों में भी लेखक को जीवन का रूप दिखाई पड़ता है। लेखक जे॰ कृष्णमूर्ति ने जीवन का परिचय सर्वरूपों में दिया है।

(ii) लेखक को पूरा जंगल परिचित इसीलिए लगता है कि इसी जगह से कई बार सपने में तिरिछ से बचने के लिए भागा था। लेखक गौर से हर तरफ देखता है कि और उसके सपने के बाद थानू को बताया भी था कि एक सँकरा-सा नाला इस जगह बहता है। नाले के ऊपर जहाँ बड़ी-बड़ी चट्टानें हैं, वहीं कीकर का एक बहुत पुराना पेड़ है, जिस पर बड़े शहद के छत्ते हैं। लेखक को एक भूरा रंग का चट्टान मिलता है जो बरसात भर नाले के पानी में आधी डुबी रहती थी। लेखक को उसी जगह तिरिछ की लाश भी मिल जाती है। सपने में आयी बातों का सच होना लेखक को जंगल से परिचित कराता है। इसीलिए लेखक को जंगल परिचित लगता है। क्योंकि इन सब चीजों को वह सपने में देख चुका था।

(iii) लेखक मलयज 25 जुलाई, 1980 की डायरी में 'डर' की चर्चा करते हुए लिखते हैं कि मनुष्य का मन इतना कमजोर हो गया है कि उसमें बड़ी आसानी से डर समा सकता है। बच्चे पार्क में खेलने जायें और समय होते ही यदि वे न दिखें तो मन भयभीत हो उठता है 'डर' का प्रभाव लेखक मन को भी भिन्न-भिन्न समय में प्रभावित करता है।

लेखक किसी बीमार को देखकर भली-भाँति के मिलते-जुलते विचार कर भयभीत होने लगते हैं और भगवान् का ध्यान कर प्रार्थनाएँ बुदबुदाने लगते हैं। कोई बाहर गये व्यक्ति के उपयुक्त समय पर वापस न आने पर भी 'प्रतीक्षा का डर' लेखक को घेर लेता है। मन अप्रिय घटनाओं का साक्ष्य जुटाने में लग जाता है। अचानक हृदय में प्रार्थनाओं का गूँजन होने लग जाता है और मन किसी अमोघ सहारे को ढूँढने में लग जाता है।

जो कुछ लिखा जाता है वे सभी रचना नहीं कहलाती हैं। ठीक उसी प्रकार जो कुछ भोगा जाता है उस क्रम में भी रचना के बीच सन्निति नहीं होती है।

इस प्रकार से लेखक भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में भय के शिकार हो जाते हैं। इस डर के अनेक रूप हैं। कई वर्षों से लेखक भाँति-भाँति से डरने वाला व्यक्ति हो चुका है। इतना ही नहीं लेखक मलयज के जीवन का केन्द्रीय अनुभव भी 'डर' ही बन गया है।

(iv) रघुवीर सहाय द्वारा रचित "अधिनायक" शीर्षक कविता एक व्यंग्यात्मक कविता है। इस कविता में कवि ने सत्तापक्ष के जनप्रतिनिधियों को आधुनिक भारत के अधिनायक अर्थात् तानाशाह के रूप में चित्रित किया है। आज राष्ट्रीय गान के समय इन्हीं सत्ताधारियों का गुणगान किया जाता है। जब भी राष्ट्रीय त्योहारों पर "जन-गण-मन अधिनायक जय हे' का राष्ट्रीय गान गाया जाता है तो आम आदमी जो गरीब और लाचार एवं फटेहाल जीवन बिता रहा है, इस राष्ट्रगीत का अर्थ नहीं समझता। वह उसी राजनेता को जनता का अधिनायक मानकर इस राष्ट्रगीत को गाता है। वह समझता है कि वह उन्हीं राजनेताओं का गुणगान कर रहा है।

कवि का यह तर्क सही भी है। वास्तव में आज राष्ट्रगीत का महत्त्व राष्ट्रीयता से नहीं आंका जाता। कौन नेता कितना बड़ा बाहुबली है, कितना प्रभावशाली है उसी आधार पर उस राष्ट्रगीत के महत्व को आंका जाता है। कवि की यह सोच युक्तिसंगत और समसामयिक है। आज राष्ट्रगान की केवल खानापूरी होती है। देशभक्ति से इसका सम्बन्ध नहीं है।

(v) प्रस्तुत कविता 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता आधुनिक काल के सर्वश्रेष्ठ कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा विरचित है। प्रस्तुत कविता में कवि ने जीवन रहस्य को सरल और सांकेतिक भाषा में सहज ही अभिव्यक्त किया है।

कवि कहना चाहता है कि रे मन, इस तूफानी रणक्षेत्र जैसे कोलाहलपूर्ण जीवन में मैं हृदय की आवाज के समान हूँ। कवि के अनुसार भीषण कोलाहल कलह विक्षोभ है तथा शान्त हृदय के भीतर छिपी हुई निजी बात आशा है।

कवि कहता है कि जब नित्य चंचल रहनेवाली चेतना (जीवन के कार्य-व्यापार से) विकल होकर नींद के पल खोजती है और थककर अचेतन-सी होने लगती है, उस समय मैं नींद के लिए विकल शरीर को मादक और स्पर्शी सुख मलयानिल के मंद झोंके के रूप में आनन्द के रस की बरसात करता हूँ।

कवि के अनुसार जब मन चिर-विषाद में विलीन है, व्यथा का अन्धकार घना बना हुआ है, तब मैं उसके लिए उषा-सी ज्योति रेखा हूँ, पुष्प के समान खिला हुआ प्रातःकाल हूँ। अर्थात् कवि को दुःख में भी सुख की अरुण किरणें फूटती दीख पड़ती है।

कवि के अनुसार जीवन मरुभूमि की धधकती ज्वाला के समान है जहाँ चातकी जल के कण प्राप्ति हेतु तरसती है। इस दुर्गम, विषम और ज्वालामय जीवन में मैं (श्रद्धा) मरुस्थल की वर्षा के समान परम सुख का स्वाद चखानेवाली हूँ। अर्थात् आशा की प्राप्ति से जीवन में मधु-रस की वर्षा होने लगती है।

कवि को अभागा मानव-जीवन पवन की परिधि में सिर झुकाये हुए रुका हुआ-सा प्रतीत होता है। इस प्रकार जिनका सम्पूर्ण जीवन-झुलस रहा हो ऐसे दुःख-दग्ध लोगों को आशा वसन्त की रात के समान जीवन को सरस बनाकर फूल-सा खिला देती है।

कवि अनुभव करता है कि जीवन आँसुओं का सरोवर है, उसमें निराशारूपी बादलों की छाया पड़ रही है। उस हाहाकारी सरोवर में आशा ऐसा सजल कमल

है जिस पर भौंरे मँडराते हैं और जो मकरन्द से परिपूर्ण है। आशा एक ऐसा चमत्कार है जिससे स्वप्न भी सत्य हो जाता है।

(vi) तुलसीदास रचित प्रथम पद ''कबहुँक अंब अवसर पाइ ..... गुन-गान गाइ'' पंक्तियाँ 'विनय पत्रिका' काव्य कृति से ली गयी है। विनय पत्रिका की रचना करने के पीछे कवि का उद्देश्य है कि कविता रूपी पत्र के माध्यम से अपनी दीनता पीड़ा-व्यथा को प्रभु श्रीराम के चरणों में पहुँचाना। इसमें सभी देवों की स्तुतियाँ की गयी है और उन्हीं के माध्यम से प्रभु के प्रति भक्ति-भावना भी प्रदर्शित की गयी है।

उपर्युक्त पंक्तियों में माँ सीता की वंदना करते हुए कवि विनती करता है कि हे माँ ! कभी अवसर पाकर मेरी विनती प्रभु श्रीराम के चरणों में प्रस्तुत करना। मेरी करुण कथा की चर्चा करते हुए मेरे प्रति प्रभु-कृपा के लिए याद दिलाना। उन्हें याद दिलाते हुए कहिएगा कि आपकी दासी का एक भक्त आपका नाम-जप एवं भजन के द्वारा अपनी जीविका चला रहा है। मेरी दीन-हीन अवस्था की सुधि श्रीराम को छोड़कर और कौन लेगा ? श्रीराम की कृपा अगर हो जाएगी तो मेरी दीन-दशा सुधर जाएगी। हे जगत की जननी, मेरी तुमसे विनती है कि अपनी कृपा कर मुझ असहाय की सहायता करें। तुलसीदास भवसागर पार कराने वाले प्रभु श्रीराम का गुणगान करते हुए दीनता से मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

6. (i) शीर्षक : **बसन्त ऋतु की शोभा**

बसंत के आते ही शीत की कठोरता चली जाती है। पश्चिम के पवन ने वृक्षों के पत्ते गिरा दिये तथा वृक्षों और लताओं में नये पत्ते निकल आये। उनकी सुगन्ध से दिशाएँ महक उठीं। आम की मंजरियों से सुगंध आने लगे, कोयल कूकने लगी तथा फूलों पर भँवरे मँडराने लगे। प्रकृति में सर्वत्र नवीन जीवन का संचार हो उठा।

(ii) शीर्षक : **भाषा का महत्त्व**

राष्ट्र के लिए भाषा जरूरी है, जिसके द्वारा मानव अपना विचार एक-दूसरे के सामने प्रकट करता है। भाषा की भिन्नता मनुष्यों में परस्पर प्रेम में बाधक है। भाषा के कारण मानव एक-दूसरे के समीप और दूर जाते हैं।